International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 7 Issue 2, March-April, 2019, Impact Factor 3.275

# अज्ञेय की स्त्री दृष्टि

श्री धर्मवीर

---

**भूमिका–**

अज्ञेय जी अन्य लेखकों, कवियों या अन्य विचारकों से ज़रा हटकर सोच रखते हैं। उनके लेखन में आपको चिंतन व लेखन की एक अलग विचारधारा देखने को मिलती है। अज्ञेय जी का दृष्टिकोण प्रयोगवादी, प्रगतिवादी रहा है। इसी शृंखला में उनका नारी के प्रति जो दृष्टिकोण रहा है, वह भी अन्य से अलग ही रहा है। हिन्दी कथा साहित्य को नयी दिशा देने में अज्ञेय जी अग्रणी रहे हैं। अज्ञेय कथा साहित्य की नारी एक ओर पुरूष पर न्यौछावर होने में अपनी सार्थकता समझती है। दूसरी ओर क्रांति की अग्रदूत बन देश–प्रेम हेतु बलिदान भी हो जाती है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। अज्ञेय ने अपने कथा साहित्य में नारी की सामाजिक स्थिति को उच्चत्तर बनाने का भरपूर प्रयास किया है। युग की अभिव्यक्ति के अनुकूल नारी जीवन की प्रमुख समस्याओं को अज्ञेय ने अपने कथा साहित्य में स्थान दिया है जैसे :– वेश्यावृत्ति की समस्या, विधवा विवाह की समस्या, परित्यक्ता समस्या, अनमेल विवाह की समस्या, आधुनिकता की समस्या और आर्थिक समस्या को विशेष रूप से चित्रित करते हुए इनके समाधान हेतु विशेष अध्ययन व चिंतन प्रस्तुत किया है। अज्ञेय जी आधुनिकता के साथ नारी को भी आधुनिक होने पर बल दिया है किन्तु सामान्यतः समाज में देखा जाता है कि पुरूष समय के अनुसार अपने हर क्षेत्र में बदलाव लगभग कर लेता है किन्तु नारी को समाज में बदलाव नहीं करने दिया जाता। अधिकतर नारियां समाज में रहते हुए खुल कर जीवन को व्यतीत नहीं कर पाती। वे अपनी मूलभूत इच्छाओं और आवश्यकताओं को भी दबा देती हैं किन्तु अज्ञेय जी ने उन्हें ऐसा न करने के लिए कहा है कि वे अपना जीवन समाज के डर से न जिएँ वे अपने जीवन को अपनी आवश्यकतानुसार, अपने तरीकों से पूर्ण स्वतंत्रता से जिएँ। उसे कोई भी कार्य करना है तो वे खुलकर उसको करें, अपने आपको आधुनिक बनाएँ–

स्मरण हमारा–जीवन के अनुभव का प्रत्यावलोकन हमें न हीन बनावे
प्रत्याभिगुख होने के पाप बोध से आओ बैठो : क्षण भर
यह क्षण हमें मिला है नहीं नगर सेठों की फैया जी से
हमें मिला है यह अपने जीवन की निधि से ब्याज सरीखा।

अज्ञेय ने अपने जीवन को निडर, निर्भय होकर एक नारी को जीना चाहिए ऐसा कहा है। अज्ञेय जी ने कहा है कि हमें अपने अतीत को नहीं देखना चाहिए हमें पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए बल्कि हमें नए जोश के साथ, नई सोच के साथ आगे बढ़ना चाहिए क्योंकि अतीत का स्मरण कई बार हमारे अंतर्मन में हीन–भावना भर देता है तो हम भावी जीवन को अपने तरीके से नहीं जी पाते हैं जो जाने–अनजाने में हमसे पाप हो गया है, उस अतीत के पाप का अगर हम स्मरण करते रहेंगे तो फिर वर्तमान और भविष्य को नहीं जी पाएंगे। इसी कड़ी में आगे कवि कहता है कि उन अतीत की बुरी बातों को भूलकर आओं हे प्रिये–मेरे पास बैठो। पलभर के लिए ही सही मेरे पास आकर इस हरी–हरी घास का आनंद लो। अपने जीवन को वर्तमान में जीओ। क्योंकि यह जीवन हमारा है, यह जीवन का प्रत्येक क्षण हमारा है। यह जीवन का समय हमें समाज से, समाज के प्रतिष्ठित धन–सम्पन्न लोगों से नहीं मिला है। बल्कि हमारे जीवन का यह समय एक ऐसा खजाना है जो ब्याज सहित हमें मिला है, जिसकी कीमत हमने चुकायी है और भविष्य में भी चुकाएंगे तो इस जीवन को हम किसी के दबाव में आकर, किसी की सोच के अनुसार क्यों व्यतीत करें बल्कि हम इसे अपने तरीके से जीएं। अज्ञेय जी चाहते हैं कि नारी को अपना जीवन आधुनिकता के साथ, अपनी सोच व तरीके के अनुसार जीना चाहिए। अज्ञेय ने काव्य में तो नारी का वर्णन आधुनिकता के साथ किया ही है, इसके साथ–साथ अज्ञेय कथा–साहित्य की नारी निम्न और मध्यम वर्ग की होते हुए भी स्वाभिमानी है। अज्ञेय जी नारी स्वतंत्रता के पक्षधर रहे हैं। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में भी नारी को प्रेम की स्वतंत्रता प्रदान की है। निम्न पंक्तियों में प्रेम की स्वतंत्रता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है–

आओ बैठो तनिक और सटकर,
कि हमारे बीच स्नेह भर का व्यवधान रहे,
बस, नहीं दंरारें सभ्य शिष्ट जीवन की।

'हरी घास पर क्षण भर' इस कविता प्रेम की स्वतंत्रता का वर्णन किया गया है। अज्ञेय जी ने कहा है कि आओ और मेरे पास आकर बैठ जाओ। पास भी बिल्कुल सटकर बैठ जाओ और हम आपस में केवल प्यार भरी बातें करें और अन्य किसी प्रकार की बातचीत हमारे बीच न हो। हमें लोग क्या कहेंगे, समाज क्या कहेगा, ऐसी सभ्य जीवन वाले बातें हमें नहीं करनी है और न हि इन बातों की कोई चिंता करनी है, बस केवल और केवल प्यार भरी बातें करनी है। इस प्रकार अज्ञेय जी ने स्वतंत्र रूप से प्यार करने को कहा है। अपनी प्यार भरी इच्छाओं को दबाने से अज्ञेय जी मना करते हैं। नैतिक मानदण्ड परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। अज्ञेय कथा साहित्य की नारी नैतिकता के नए आयाम प्रस्तुत करती है। अज्ञेय की एक पात्र रेखा के अनुसार जिस कार्य में पाप का बोध नहीं जुड़ा है, वह नैतिक है। 'नदी के द्वीप' उपन्यास में अज्ञेय जी ने गौरा और रेखा के द्वारा कई प्रसंगों पर नैतिकता के ये आयाम प्रस्तुत किए हैं और साथ में प्रेम की स्वतंत्रता को भी अपने अंदाज में प्रस्तुत किया है। रेखा विवाहिता होते हुए भी किस प्रकार भुवन से प्रेम करती है, यह अपने आप में अद्वितीय है। अज्ञेय जी ने प्रेम के साथ नैतिकता का ध्यान रखते हुए जो लेखनी चलाई है, वह आप में अद्वितीय स्थान रखती है। अज्ञेय जी ने नारी पात्रों में रेखा जैसा पात्र समाज के सामने रखकर पुरूष समाज को सोचने पर मजबूर किया है। रेखा सामाजिक संस्था के प्रति विद्रोह कर व्यक्ति स्वातंत्य की उद्घोषणा करती है। विवाह संस्था में अविश्वास तथा उन्मुक्त प्रेम में विश्वास करती है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह का वर्णन भी रेखा और उसके पति के उदाहरण से लिया जा सकता है कि किस प्रकार उनका विवाह होने के बाद रेखा अपने पति का प्रेम कभी प्राप्त नहीं कर पाती। उनका पति वैचारिक कारणों से व अन्य कई कारणों से रेखा से प्रेम नहीं करता। फिर भी रेखा प्रतीक्षा करती रहती है कि एक दिन उसका पति उससे प्रेम करेगा किन्तु ऐसा नहीं हो पाता और अंत में तालाक हो जाता है। यह अनमेल विवाह का अच्छा उदाहरण है। अज्ञेय जी की नारी पात्र राजनीतिक क्षेत्र में साम्प्रदायिकता का विरोध कर धर्म–निरपेक्षता की स्थापना करती है। पाप और पुण्य की परंपरागत व्यवस्था को छोड़कर, अपने दृष्टिकोण के आधार पर नयी व्यवस्था प्रस्तुत कर नैतिकता को नई दिशा प्रदान करती है। यह स्त्री की वह स्वतंत्रता है जिसे आज 50 वर्षो बाद भी गिनती की नारियां समझ पाई हैं। जबकि अज्ञेय जी इस पर गहनता से दशकों पूर्व ही विचार कर गए।

अज्ञेय कथा साहित्य में नारी ने राजनीतिक क्षेत्रों में भी अपना योगदान दिया है। पुरूषों के समान नारियों ने भी क्रांतिकारी कार्यों में सहयोग करते हुए विभिन्न समस्याओं का सामना किया। पुरूषों की लोलुप दृष्टि से वह इस क्षेत्र में भी नहीं बच पाई। अपने सम्मान की भी आहूति उसे देनी पड़ी किन्तु वह आगे बढ़ने से अपने कदमों को नहीं रोक पाई। अपनी संवेदनाओं का दमन कर संबंधियों के मोह को त्याग कर, प्रेम का उत्सर्ग कर वह देश–प्रेम के लिए बलिदान हो जाती है। इन बहुत सारी विशेषताओं के कारण ही अज्ञेय जी ने अन्य कवियों की तरह नारी के उपमान कुछ अलग ही दिए हैं। अज्ञेय जी का नारी के प्रति दृष्टिकोण कुछ अलग ही है–

जैसे– बल्कि केवल यहीः ये उपमान मैले हो गये हैं,
देवता इन प्रतीकों के कर गयें हैं कूच।
बिछली घास हो तुम लहलहाती हवा में,
कलगी छरहरे बाजरे की।

अज्ञेय जी ने अन्य कवियों की तरह पुरातन उपमानों से नारी की तुलना नहीं की बल्कि नए उपमान दिए हैं। नारी या प्रेमिका के लिए 'हरी घास' और बाजरे की कलगी' जैसे नए उपमाने का उपयोग अपने काव्य में अज्ञेय जी ने किया है। पुराने उपमानों से हटकर, बल्कि अलौकिक उपमानों के स्थान पर लौकिक उपमानों का उपयोग अज्ञेय जी ने अपने काव्य में किया है।

अज्ञेय विशुद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार हैं। अज्ञेय जी ने नारी का जितना सूक्ष्म रूप प्रकट किया है, उतना किसी ने नहीं किया। उन्होंने नारी के बाह्य रूप को समझने हेतु समाजशास्त्रीय अध्ययन किया तथा उसके आंतरिक मनोविज्ञान को समझने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अध्ययन से अपनी चिंतन शक्ति को प्रखर किया। अज्ञेय कथा–साहित्य के नारी पात्रों का जो जीवन–विकास दिखता है, उसमें अज्ञेय का नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा भावनिक परिकल्पना का विकास और मनोवेंगो का दर्शन

मिलता है। सामाजिक, राजनैतिक और नैतिक आंदोलनों से नारी जीवन में किस प्रकार नवीन चेतना, नवीन अधिकार व कानूनी अधिकारों में नवीन स्थान पा चुकी है। यह अज्ञेय कथा साहित्य में चित्रित हुआ है। उनके नारी चरित्र बदलते हुए मानवीय मूल्यों के प्रतिनिधि पात्र हैं। वह समाज में पुरूषों के साथ बाहर व घर में समान अधिकार के नाते सम्माननीय जीवन जीने का प्रयत्न करती है। उनके नारी पात्रों में एक विद्रोही व्यक्तित्व है। वे नव्य चेतना को समझती हैं। उनमें उसे ग्रहण करने की बौद्धिक शक्ति है। आर्थिक स्वतंत्रता और संघर्ष करने की मानसिक तैयारी है। इस कारण इन स्त्री पात्रों के व्यक्तित्व में प्रकाश है।

## निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अज्ञेय जी ने नारी पात्रों में अपनी लेखनी में प्रगतिवादी सोच को प्रमाणित किया है। उनके नारी पात्र आधुनिकता के साथ अपना जीवन यापन करते हैं। उनके नारी पात्रों को स्वतंत्रता प्रिय है और साथ में नैतिकता को भी बनाए रखते हैं। अज्ञेय जी नारी को सभी क्षेत्रों में समानता देने के पक्षधर थे। नारी की पीड़ा को अज्ञेय जी ने समाज के सामने प्रस्तुत किया है। नारी के प्रेम के प्रति व देश के प्रति समर्पण को अज्ञेय जी ने अपने गद्य व पद्य दोनों में उच्च स्थान दिया है। अपने लेखन में अज्ञेय जी ने नारी को पुरूष प्रधान समाज के लिए प्रेरक के रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री के अनेक रूपों का वर्णन अज्ञेय जी ने किया है। पुरूषों की तुलना में स्त्री पात्रों के अनेक गुणों का वर्णन अज्ञेय जी के अपने साहित्य सृजन में देखने को मिलता है। स्त्री किसी भी दृष्टि कोण से पुरूष से कम नहीं है, ऐसा प्रदर्शित करने का भरपूर प्रयास किया है। अज्ञेय के नारी पात्र परजीवी नहीं है। अज्ञेय जी की नारी पात्र स्वतंत्र है।

## संदर्भ

http://rsaudr.org
पुस्तक : हरी घास पर क्षण भर (कविता संग्रह–1949)
पुस्तक : 'नदी के द्वीप' (उपन्यास)